

राज
कॉमिक्स
विशेषांक
मूल्य 20.00 रॉपया 545

लावा

नागराज



लावा! पिघली और दहकती हुई चट्टानों का वह सैलाब जो पृथ्वी के गर्भ में हमेशा से मौजूद है। जब-जब ये सैलाब ज्वालामुखियों के रास्ते से बाहर आया उसने विनाश का तांडव पैदा कर दिया। इसके रास्ते में जो आया वो खत्म हो गया। आज दुनिया और लावा के बीच में खड़ा है नागराज। और उसकी तरफ बढ़ता आ रहा है...

लावा

कथा :
मीली सिन्हा

चित्र :
अनुपम सिन्हा

स्थिति :
विनोदकुमार

सुलेख एवं रंग संयोजन :
सुनील पाण्डेय

संपादक :
मनीष गुप्ता



तुम एक अजब सरी हैं, नगराज !
तु इस स्थिति का बल लेकर जलवा
होता, जहाँ पर अंध डेन्स और अंध
सरी के ऊपर जमे जागी रहते हैं।

बल, कहां
पर है बल स्थिति ?

तुम से
इच्छा होती है
के विनाश स्थिति
अजब की बात
कर रहे हो। उसका
पता है किसी को
कहीं बल सकता
होगा !

ये फिर व अजब स्थिति
उत्पन्न हुई है नगर की नुकती
के वजह ! और फिर अपने विनाश पर
दृष्टि विचार कर !

महाद्वीप- बुद्ध की पर से जुड़ सक, ऐसा द्वीप है
जहाँ पर अर्धचंद्र चिह्न से लकड़बग्घे और बुद्धधारी
मर्क का चिह्न है -

इस द्वीप के संस्थापक महानस काष्ठवत इस
द्वीप को अपनी योग साधना के द्वारा अर्धचंद्र रखने
हैं। तबिक जहाँ बुद्धि की तरंगों में पड़ते द्वीप
बुद्ध रहे और अन्ततः वहाँ पर आकर अपनी
आत्मा में अर्धचंद्र बैठे -

पर वर्षों में एक दिन ऐसा भी आता है जब
प्राकृतिक बुद्धिधर्मों के आगे योग साधना
की उक्ति विफल हो जाती है -

तब सिर्फ साधना ही काल में आती है -

महाद्वीप बुद्धिधर्मों :
आज की ये महाद्वीप
जहाँ बुद्धि धर्म बुद्धिधर्मों
है। आज मकर संक्रान्ति
है। सूर्य देव आज मकर रेखा
को पार करने है, और बुद्ध की
बुद्धिधर्मों में इससे बिल्कुल
में आ जाते हैं। और उनकी इस
क्रिया से एक दिन के लिए महा-
द्वीप अर्धचंद्र नहीं रहता है।

आज अगर सभी को अतिरिक्त
अपने में समक रहना होना। द्वीप के
कालों मकर संक्रान्ति परवर्षों होनी।
और अगर कोई द्वीप की तरफ
आता बिल्कुल दे तो पहले
स्वयं को बुद्धिधर्मों की योगिता
करनी होगी। अब मैं सूर्य
देव की असाधना के लिए
ज रहा हूँ।



सभी सैनिक नर
महाद्वीप के कालों तरफ फैल
जाते और अपनी योगिता रखने
रखते। इस वही आहूत कि इस
द्वीप पर मकर अर्धचंद्र और इस
कारण इससे बिल्कुल उनकी
अहंता हो।

जीव के बारे में तब तक किसे जल्द पर तो
हजार सालों का सफाई है, और उस तरह
में जाती किपरी को अपना को अपनी
तरफ करने से लेकर जा सकता है -



परन्तु जब मुनीबत आमसज से आकर सिर पर टूटने लगी तो
तो कहें बच करे-



मानवता को अगर मुझसे
कुछ भी पता है तो मैं कह सकता हूँ कि अगर
जैसे तो मैं अपनी जान देने के लिए तैयार
हूँ। मैं अपना दुःखित अंश कराना हूँ कि अपने
मुँहको यह लेना दिये।

हम आपके
आसानी हैं सिर्फ
कसब, कि
अपने हमारे
प्रयोग के लिए
अपने आपको
सर्वोत्तम के
रूप में प्रस्तुत
करें।

आज हम आपके आसारे
करके कर रहे हैं। कम लगी
हुआ आपकी पूजा कोली।
आपकी बेटी को भी हमने वहाँ
पर आपके साथ इलेक्ट्रिक बुराफ
है लकि बह और अपने पिता की
सहायता को अपनी ओर से
बेव सके।

और इस मोरबजायी
परमों को हमारे के लिए
पाव करे।



मुझको इतिहास
करें। इस मुँहको
हमारे बावजूद कि मुझे
करना अर्थ है।

यह तो हम आपके
पक्षों की बात चुके हैं कि हमारे स्वर
सेवा जयकेसिकल प्रोडक्ट बनाया है,
जिनको पीने से डंसन आस पर बिजल
न मिले।

उसके अंशर आस
की कृष्ण के प्रति मेरी
प्रतिरोधक क्षमता विकसित
हो जल्दी, जो इसके डारीर
को जलने लगी होती।

इस समय
का प्रयोग हम
पक्षों पर
सकलनपुर्ण
कर चुके हैं।



बहुत ही जल्दी पर इसका
प्रयोग करना आनी सही है।
बस इसको इनका पास है, कि
ये रणरत्न अगर ईमान से
बातका नहीं पहुँचाएगा तो
तु कबाला भी नहीं
पहुँचाएगा।

अगर तु कबाला पहुँचाएगा तो
और मैं अजबाला की सेवा के
लिए यह सबका उछाले को
निकार हूँ। पर मुझको कुछ
नहीं मरना है आ रहा है कि
ये प्रणेत अगर इसकी अजबाला
में कराना नहीं चाहते हैं?

क्या इसका
अपने प्रणेत से कुछ
संबंध है?



हाइड्रो से बंध है मिस्टर ककडा।
अधिकतर बंधा अपनी जीवनी
में जैसे प्रणेतों की इज्जत नहीं
देते हैं जो ईमानों पर किए जाते।
और फिर सरकारी इज्जतान नेने
में सचय भी तो बहुत लगता
है।

हमारे पास इनका
बकल नहीं है।
इसीलिए इस से
प्रयोग ऑनरिपीय
आपु सीमा में कर
रहे हैं। नहीं पर
किसी को ही
इसका नहीं
बकल।

अगर बहुत
दूर की सेवाएँ है
मिस्टर जैस...



... अगर बकल कम
है तो फताफत बनाना
कि मुझको क्या
करना है।

सबसे पहले तो आपकी
इस चीज को अपनी आँखों पर
पहुँचा है। यह इसकी प्रणेत
के अंतर्गत अपने प्रणेतों में
होने वाली बारीकी में बारीकी
हरकत को भी हमारे बैकग्राउंड
पर फिरताना रहेगा... और
फिर...

जैस। मुझे
अजबाला आने
लगा है।

असा
बकल है।

अभी तो इस
वर्षी में बहुत
दूर है।



हम... आप अपनी से जल्दी
से चीज पकड़ित मिस्टर ककडा।
फिर इस अपने बकले हैं
कि आने आपकी क्या
करना है।

और, जैस
मिस्टर
जैस।



ये देखो
जैस।

अरे, जयसुच। पर इस इज्जती
अपनी यहाँ तक कैसे पहुँच
सक। आगे तो रणरत्न का
सिफत पूर्ण तरह से निकल
आ नहीं है।

जो निकल है
उसी की इज्जत होना
पिता से।

हमारे पास इनका
में बाककर कहने लायक
ईशान नहीं है।





कलाम ने सैन्य सहाय
पर अपनी बंदी को ले
बचा लिया-

लेकिन कलाम को धक्का
देकर सपने ने झटपट जलम
कोई नहीं था-

ये क्या हो रहा
है ? कुछ बंदी सचु
घान से गिर गई है और
वह सीधे अकालपुरी के
सुबुले के अंदर जा रही है।
इसको बचाना होगा; पर
कैसे ?

आगर महाराज
कालबुल गलाधि में न
होने से उनकी उन्निरा
इसको बचा लेती। अब
ले आकर वही अदली
इसको बचा लेके उसे इमने
साथ ही बुका है।

इसका घंटा से
लेस करीर बहकने लगे
ने घुसना चला गया-



कलसावा का हाल अबबले के लिये विमर्श की तरह-

जैसा ही बेलाब था-

हो हा हा! काला रात
पंच मित्रों पहले लगे
के उड़ते हुए थे। पर डेन
अब तक हमारे कंप्यूटर पर
इसके जिक्र ही के सुबुन
मिल रहे हैं।

फटन से है ही।
सावे के हुजारे दिखी लगन
में कलकल भरा कब तक जिक्र
रहेगा।

पर जहाँ वे
तक लिखने
नहीं मिली
मैं।

यों के हिलान
से हम वन कलक
मोही टेपेरेपर 120
डिग्री में ही रहे।
मरह जेडर 400/
180 है, और हुज
रनि वाली कर्ट रेव
है 2.75। कुछ ही
दर में उसका जिक्र
लगे के और बस
की तरफ कट
पहुँचा।

पर एक बात पक्की
ही गई है। अब धेदी-मेदी
अब और धमकी को हुजरी बस
की पैसे बला आगम में अंश
मिलेगा।

प्लेन को ऑटो पावरफ
से हटा ले और इसका बल
महानगर सपपोर्ट ले चलो।

अब इस 'स्टेडी स्टेट लीक'
से पैसे कलकले का बलक आ
गया है।

महानगर पर रबन में कलक
बला था-



पर महानगर वाली को
रबन में की परकाह नहीं
रहनी थी-

फिर बह रबन की हुज
से ही, पानी से ही...

क्योंकि रबन से लेने
महानगरों की जिक्रों
का एक अंत बल युक्त
रहना-

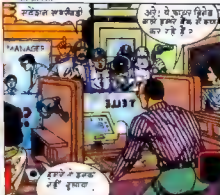
... या फिर आग से हो-





अरे! करे रुको! अड़क! अड़क! बात का है?

अरे हटो! अको! सरल के लिए ठहरो! यहाँ बैठे हो?



मॉटेडल सभनेबड़ो

अरे! ये फायर ब्रिगेड क्यों हमारे बीच में घुस कर रहे हैं?

हमारे से इन्कट गरी दुशाक



साफ केजिड, बीच, आर हसन १२ पर जू हाथ है। इसने आर हाथने की काँई रिपोर्ट नहीं की है।

आपने नहीं की, पर इस बेल कंपनी ने की है। जिसका पताप आपने देक की इसमन के सी से म न गहा है। इस इसमन के सीक मिये के, पताप है एक केजर रिज सीक हो एक है।

मलक है, आप सभी को सुझाव है कुछ २ एक हल को सूचकत देखिए।



मैं मू ५५५ हैम की मकूर, मे आ रही है।

ये मकूर तो बहाने है न रही है।

एक इसमन को भी पताक में दक मकानी है। पताकत विविध को गजारी का दीजिए।

खरी खतरा बहाना न रहा है, अगर सब इस बहाने सेक बल के अंदर बैठे हुए है।



फायर सीक को दुशकत सभासने की नकुरन नहीं पड़ी। अलावत हर कर्मचारी दोड का अलावत सिकारी बहाने के मूड में छ।

अरे, गलत हो।

उठ दक रिज।





धूप धूप केक नू तो मक बचने से
 सीसीकाप मू, मही सुट मकलः
 धिपक कड है बह मही मूप
 उभी वमज्ज पन उडा देन

सिद्धा
काल है ?

अ... अली ने चहूँ
पल ही पल

कहीं इधर उधर सरक रहा होना
तु कूट पहने है : सप सप कुक्षित्त
नहीं पलक : अब कटाफट नेट
अप अंशही नैकतों में

उन लोगों को भी
बुझा दो कि अगर बुझने का
मौक़ा कर रहे हैं!

और फिर -

स्वतंत्रता लक्ष्य लक्ष्य है !
हमने नौसेना की एक बड़ी कमान
दूर के लिये बंद कर दिया है

कुल ००
०० लिपि
०० ३

हिण्ड ५६६ मज्ज
५६ मज्ज : न पुष्पिण,
न गोमर्ष, न ग्वाभरा.

और हम
को नये सत्य
सत्य

हमने बैंक
में दूसरा कलेंडर
बैट किया

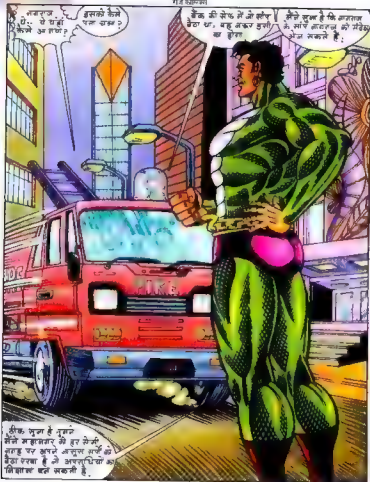
और अब हम खुदों, बीस।

हार्दिक स्वागत के
लिए मैं आपकी ओर
आ रहा हूँ।

हृत्सवित्र हृत्सवित्र
 सत्य सत्य अग्नि हृत्सवित्र के अंकुर
 जलें। हृत्सवित्र हृत्सवित्र बटवत्सवित्र
 बृहस्पति सत्य है। हृत्सवित्र हृत्सवित्र
 जल सत्य सत्य है।

हम खुदों
क्यों ? क्यों खुदों
हमें ?

महाराष्ट्र
मुंबई



महाराज
ये... ये यहाँ
कैसे आ गये?

इसकी कैसे
पता चले?

हैंक की सेफ में जो कोय
बैठा था, वह लेकर इसी
आ गया

मैंने सुना है कि महाराज
के साथ महाराज की गैरि
आ गये हैं

ठीक सुना है मुझे
मैंने महाराज की हार से ही
सुना है पर अपने असुर मर्जे को
बैठा रहा है जो अपराधियों को
शिक्षा देने लगी है



मकलन मग बीम इस
मोड्युल का मजदूर है, इस
ही इसको फिर इस इन
मजदूरों में आजाद हो
आया है

इस अद्विष्ट, दुष्टने के
बिना इसी दुष्टने के
बचन में भी है; यह वक्त
समय-समय पर भेज
देता...



... और ये
दुष्ट मजदूरों का
बचन

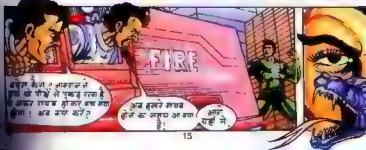


हा हा हा! ये
मकलन मजदूरों
की उड़नी

मकलन मजदूरों
में से कभी न निकले



यह अब ही
दुष्ट और मग
नहीं बच रहा



बचने के लिए मकलन में
इस को पीछे से पकड़ लिया है
अब तब तक मुँह बंद कर
लिया! अब क्या करें?

अब हमारे मजदूर
होने का मजदूर अब बच
है!

अब
यहाँ से



हुं क ऊ क ऊ क ऊ

ये जॉन फ्रेड गढ़ा है और जॉन फ्रेड गढ़ने की मेहनत धरकर बंद कर देता है

पर मेरा दिमाग तो दुबुझी मेनी ने धरकर ले जाता है भई!

अब क्या करें? अब तो भाग भी नहीं सकते



भदोंके मेरे बुझाना! यानी साबरका बैक के लीकर मे हुजका साथ ले फिरलोस की लड़क भूयकर की भगता था

ये कम से कम सेलिफ गहकर मे भरोस है

हीन: हीन:

भूक बर कया?

उग भूज गल?



नगराज पर सेलिया उत्तर नहीं करनी है

अब पाद दिमाग रहा है, जधे?



मे अलगाणी से मल्लुई के अलस
मल्लस होरे के मल्लि है-



मेकलि लललल लललल
के लल ललल ललललल



मल्ल लललल
मल्ल लललल
कुलल लल-

मल्ललललल लललल लल



वा पुलेविचन जैसी की
ओके-समय रेसिंग

कैसे उनका मुकाम
मेकल कोकर
अनले की कोरि
करे



मैमिकन काक नोंच रलकुन में ले अयलन का नचय ही नहीं



बताओ, हाउ
के रने कहा
है?

रेमे नहीं लोट
बमरी ओकुन में भरे
हुन हैं!

मब
अपनी
अकटे
डकने

गुड! अब इस पुमिज
के अने का इनसा
करेंगे



हा हा हा अब न कुकरो
तक कुक भी नहीं रंग रलक
अतराम, और तक तक इस लेटों
से भरे मैमर मेकर भय पूके
होने।



नहीं अतराम कुनरी
आमाली से मेरे दस करेद
मुकरो चीन नहीं सकते!

अब कुकने कुनी
कोम में भय पे
लिनिडर मेरे कान
आमल

अह! मैं कुन
अर के सिप तेयाए
नहीं या!

वे भी म कालीपुत्र के ही होती है, और मुझसे मर्ते के साथ होने के कारण यह भी इन्हीं के सकल प्रभाव के भी म कालीपुत्र के समान ही है।

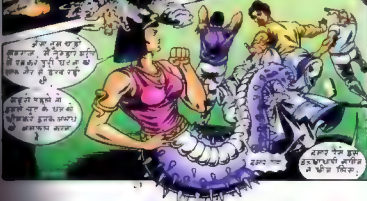
मुझे ठीक होने से लेका सत्य सत्य पर नभ तक मुझको इन मुँहों की भीड़ में गहरा हुआ

सीकरी।

अब वे सब मिलकर ही मुझको के हाथों में बाँध करके इन सैकड़ों इन्सानों में मधमे अनुभवों से ही मैंने मराने की कल्पना में मरने का रास्ता -



सब सच है, एक ही अनुभवों के कारण मैं मरने



मैंने उस छोटे लड़के में तेरे ही चेहरे की एक ही चेतना की एक ही चेतना की

मैंने उस पक्षी में तुम्हारे चेतना की एक ही चेतना की एक ही चेतना की

दरअसल मैंने इस दुनिया की सारी चीजों में

गोडाली के गनसुखने की शक्ति बुढ़ों के लकड़ने की शक्ति से कहीं ज्यादा है।

अगर कहें गोडाली की बुढ़ा काबुल के बुढ़ों से भी ज्यादा खतरा है।

इस लकड़ने में गनसुख है

और लकड़ने के चेहरे से भी ज्यादा खतरा है!

अब तुम लकड़ने की शक्ति लकड़ने पर लकड़ना!

ये लकड़ने लकड़ने की पकड़ गई है, जैसे की हाथ में लकड़ने और लकड़ने है कि अब आजकी लकड़ने

आऊ, ये लकड़ने की लकड़ने से लकड़ने लकड़ने लकड़ने है

आ SSS है!

मुझे अगले लकड़ने लकड़ने के लकड़ने लकड़ने है

लेकिन घटनाक्रम
ऐसी ही बहुत अनेक
हैं।

ये क्या हो रहा है? मेरे
आगे पर अभी तक तो
अचानक मेरी से विचार
नहीं है। और कामकाज
तो तब होता है।

पर जो भी हो रहा है
अचानक ही हो रहा है।
क्योंकि इस गली में
बंदूक के कारण पैदा हुई
मेरी घृणीय की
कमजोरी को दूर कर
दिया है।

लेकिन फिर भी- बहुत कम तक
पहुँच नहीं गई-
ओ अजबत
ये... ये क्या है?



ऐसा यह मेरी
तक है नहीं, मेरी
लेकिन मुझे तो पता
चला है और वह जो
मुझे तो पता चला है।

लेकिन अब मुझे के बीच ले कुछ ही
मिनट की दूरी पर है-



ये तो सब के भारत
पर ये भारत के बीच बीच
अचानक कैसे कुछ रहा? महानगर
के जो अलपस लेकड़ों और नक को
बहालभूरी ही नहीं है।

ये भारत
अचानक नहीं हो
सकती। अचानक
कैसे किसी को
इसने का हाथ है।

जबराज का काक नहीं सिद्ध होने में सिक संक वस अरा-

उस 5555 है।

मैं आलाह हो
सक। मैं आलाह हो
सक।

अब मुझे
इतना है। मुझे
इतना है।

ये क्या बना है? ये क्या
पीन कर रहा है और बिल कुछ दुध
या होले बिलडा क्या कैल रहा
है?

ये मे सिके
यही बना सकता
है।

और इस सिस्टम
लगा से ये सक्ज पूरने
की हिमत सिके दुम ही
कर सकते हो जबराज।

हीरो है, मुझे इस बेहोश लुटेरे को
जैसे शिवल दूँ, मुझे मेरे पुर करके
बड़ी लड़ाई होने का जश्न कर लूँगा।
देखो... अब मुझे सिस्टर साव
इस इलाके का कारण जानने की
कोशिश करना है।



ओ. के.
निकालो।
बस, जरा
जल्दी करो।

हे सिस्टर साव,
कुक जिनट मुझे
कौन और इस आदमी
को नष्ट करने का
योजना है?

आहा हाँ, हाँ, अवश्य
यही मेरा जज है। वह इससे
शिष्टता, मुझसे बड़ा
मूर्ख है। लेकिन मुझे दुंदुब
है। मुझे दुंदुब है।

मैं कहाँ
पर हूँ?



मुझे सहायता देने
की और मैं भागना है।
मुझे बताओ कि मुझे क्या
करना है?

आपको मेरे पास
जीन को दुंदुब से
मुझारी कुछ मदद
करनी है।

मैं क्या दुंदुब हूँ?
यह मुझे आता है।
पर मुझे, इसका दुंदुब
मुझे अच्छी है। वह...
मुझे जीन नहीं मिली
मेरे मेरे जश्न

पर बहुत जीन है क्या?
अब मुझे ये पता नहीं
है कि दुंदुब ही क्या है
कि वह जीन परोई
कहाँ पर है?



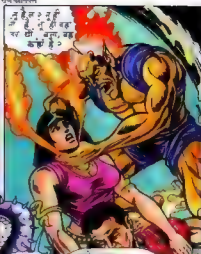
हैं, धोका धोका
पता आ रहा है, उस
जगह पर...

... उस
जगह पर...



मुझे... मुझे एक मही
आ रहा है पर तुम से बहुत
पर तो बहुत ही मुझे तो पता
ही है कि मैं किस चीज की
बात कर रहा हूँ!

अरे, अरे, तुम
कहा कर रहे हो
मुझे मैं, मुझे!



मुझे... मुझे
आ रहा है पर तुम से बहुत
पर तो बहुत ही मुझे तो पता
ही है कि मैं किस चीज की
बात कर रहा हूँ!

मुझे कुछ समझ
में नहीं आ रहा है कि तुम किस
चीज की बात कर रहे हो



मुझे... मुझे एक मही
आ रहा है पर तुम से बहुत
पर तो बहुत ही मुझे तो पता
ही है कि मैं किस चीज की
बात कर रहा हूँ!

मुझे बस इनका
पता है कि वह चीज
क्या है। वह
कहाँ पर छुपकर रहता है
तुम मेरी चीज को बत
ना भयान कर दूंगा मैं
तुम्हारे



बस, बहुत ही
तप, धूलकमल न
रुद्ध है और विजय
कुमार का लड़का
कर रहा है

शेख मौजों की अब वे लो
अगर मैं नहीं बुर नहीं ही
नहीं तो मैं मेरी बस तुमका
असह पर 'डूज' चीज को
कैसे देखेगी

मुझे अब
किस बुरा
है।

मेरी चीज
को मुझसे
चुनने चाहते
हैं



पर मैं... उसका नाम छ मेरा है ही,
आज मैं ही उसका नाम लेने के लिये
आया हूँ पर सलामत कर दूँगे



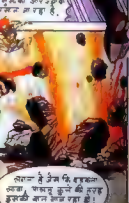
आइस हूँ, इसका हर
बंद मुझे की और मुझे
भुलाने का रहा है,



आज मैं लालच बहुत
लिया हूँ मैं कर रहा हूँ मैं
आज मैं कर रहा हूँ मैं



ले लोके का
बहुत भयानक
उसकी पूरी तरह
कुल्ला है -



आइस हूँ इसका
मैं लोके पर रहा
विशेष है -

लोके है मैं कि बहुत
आज, फलाने कुले की तरह
इसकी जान लाने रहा है!



आज बहादुर-मूढ़ से
आप के भयान कुतर रहे
हैं। और आज का बहादुर
होमरों की तरह बड़े-बड़े
हैं। इस बहादुर को सिर्फ
जोड़ा ही शोक सकता
है।

मुझे आज की
कादू में करके इस
बहादुर को शोकान
ही होगा।

मही जयराज, एक
आजो मुझे मैं लेगी
नैत्र शक्तियों से मुक्त
से बच लिया था। पर
मूल में पड़ने ही। कपि
मुक्तान मुझे हूँ। अब
अगर तुम सिस्टर आज
के पास बच ले मुझी
गलब भी नहीं मिलेगी।

हैंक
कहा।

पहले मुझे
कुछ और करना
होगा।



अगर ये होना ही मुझ
है तो मैं इसको मर ही चुने
मे बहादुर कर दूँगा। और
उसके लिए मैंने इसका नाम
तक पहुँचाने ही आज कदों
कि मेरी जवाबदारी आज
की हीकार को पर नहीं
कर सकती है।

पर तुम इसके पास
पहुँचो तो मैंने

इसके लिए मैंने
आइडिल मर चुकी
है। आज मैं
साथ।



आज ये तुम क्या कर रहे
हो लक्षणः फायर गैज
की योजनाक, मर के कुछ
मक पहचानने आ रहे हैं।

ये फायर गैज मूल के
फायर गैज में बसती हैं और
मस्तेरम अतिरोधक होना
है। ये गार लक्षण और बड़े
हम मुझे के बुर मुझे, उसी
दौर मेंक मर की रही मे
सुरक्षित नहीं है। जिनकी के
में मैं आज मर पहुँचकर
उसके बहादुर कर सकूँ।



बहुत भार मुझे तुम
होने का मुझे मुझे और
नहीं रखेंगे। क्योंकि मैं
मुझसे अपने के हार
सकने को जाने में चेष्ट
दूँगा।

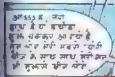
आज इससे पहले कि ये
आज तुम मेरी एक पहचान
कर मुझे भ्रम कर दोगे
मुझे मेरी जीज का पत
बता दें और तब मैं
मुझसे अपने बहादुर
दूँगा।



असह्य दुःख
मैं हूँ



मुझको दुःख
है किन्तु मैं भाग



असह्य मैं, मैं
हाथ है टूट कर
मुझे घबराकर आ रहा है
मैंने सोचा मैंने भगवान् - तुम्हीं
कीजिए, साध साध मैंने देखा
है मुझमें भीतर में

यह मैंने मुझ
में ही है
दुःख



मैंने मेरासाथें देकर,
मेरा दुःखको गेकर



असह्य मैं, असह्य
उत्थित है, असह्य
हमको, हमको
भावे में, उत्थित
भावे में मैं में
है बनी आत्मीय
ऐक्यकर मुझ
पर हमारा
रही है।

इन्होंने तो मेरे पुरे पगल को
फेल कर दिया है; अगर मुझे
लावा पर एक बार और कदम
का सौंदा बिना जान तो ये सड़क
यहाँ पर खाल हो जाए!

लहरे की लहरियाँ
जगमग के भुलभुल
आ रही थीं

और जगमग के पल उसने लहरे के लिए
कोई भी इतिहास नहीं था-

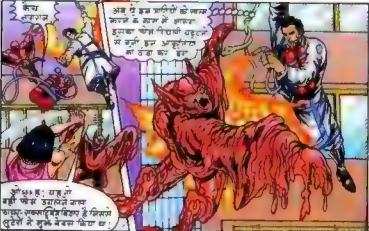
लेकिन अब लगता है
कि रचना होने की बारी
मेरी है

आइए



कैच
लगाया

अब ये इस जगहों के पगल
माल के काम में लाया
इसका चेहरा पीछे की तरफ
से बड़ी इन अकाल
का उठा कर था



आइए: यह तो
बड़ी फेस उठावने वाला
साहस-गुनगुनदिव्यविश्व है जिसमें
लुटेरों ने लूट बेवस किया था

श्रीप से फिर मैं हज़ारे होम
हो जाऊँगा कि, हे माँबुका
हज़ारी लाख का हज़ार



इन्होंने तो मेरे पूरे पताका को
फट कर दिया है! अगर मुझे
पताक पर सऊ वार और करने
का जोर मिल जाय तो ये डेकडर
यहाँ पर खत्म हो जाय।

लम्बे की आकृतियां
जानराज की भुलभुलानी
ज नहीं हैं -

और जानराज के पास तुमसे भड़ाने के लिए
कोई भी हथियार नहीं था

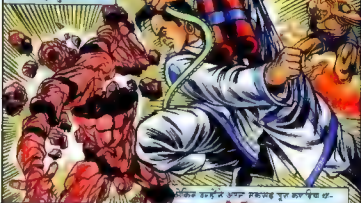
लेकिन अब लगना है
कि खत्म होने की बारी
मेरी है!
असह्य है

कैच
जानराज

असह्य ये इन आँखों को खत्म
करने के काम में अपना
हुकम फेंक सिधसी चकुराने
से बूझी इन आँखों को
न उड़ा कर हान

ओहोह है राहु तो
बही फेंक उठावने जानराज
फायर जमका दिवंग विजय है जिससे
लुटेरों ने मुझे बचस किया था

देखते ही देखते आगे से बड़े बड़े
प्राली गिरने लगे थे-



लेकिन उन्होंने अगर सकल हूत का विचार था-

क्या वो इनका सारा निरुपेक्ष था
कि वह अपने दोस्त को मारने का

फिर से आग्रह पर
हमका कर जके

आ ३३३३३३ मुझको फिर से होना
असंभव है लेकिन
अब मेरे पास तुम्हारे
करीब का जवाब है और
मैंने इसका परीक्षण
भी कर लिया है

ये पोल तुमको
असंभव ठंडा कर
देगी, और फिर मैं तुम्हें
पर आग्रह करूँगा कि तुम्हें
कर लोका कि तुम्हें
पुनी लोका में लोका
हो जाओ



गुरे 'मैंने तुम्हें की
जैसे मैंने तुम्हें की
57-58-59-60

अब अगर तु
अभी मिलने की
समय करके नहीं
चलाता है तो हम
को अपनी जान
में डूबकर मेरी
जान और का
पन बचाना है

बहुत चीजें उसी
महान पर नहीं हैं
जहाँ पर मैंने नहीं
गिराई है। अगर
इसमें और भी
होगा तो

ह... मैं महान
हूँ कि तुम नहीं की
जाए कर रहे हैं, तुम्हारे
जाने की चीजें नहीं पर मैं
बाड़ी और गरीब

और वह महान महान
के महान और छोटे हैं
ही नहीं महान

मैं हूँ कि
मैं महान और
हूँ, महान पर है महान
महान महान हूँ महान

यही मैं महान
हूँ महान हूँ महान
महान मैं महान
महान महान महान

महान, महान
महान महान महान
महान महान महान
महान महान महान

लावा, जगदीश की ही तलाश में थे-

क्योंकि, लावा, की रक्षा के लिए सबने जहाँ
हीन जगदीश में ही थी-

उसकी बेटी-

और वह एकदम मुस्कान दी

ये हाँ में
क्या नहीं आ
रही है ?

इसकी तो
कहीं दौट भी
नहीं सारी है

इसकी मुस्कान
सबसे है

और सबसे ऊँच
करना इसकी पता
सही है !

कहीं इसकी मुस्कान का कारण वह
समझ में नहीं है जो इसकी कानों
बचने, भावाभूषण के दृष्टि से बेकि
हाथ छ और जिसका हमको
विनाश नद, नहीं मिथा

काज, इस इसकी रिश्ता
को धारा पर डींगिर का
सकने में इस करी
की मात्र बच नहीं

मुस्कान का
कलम है एकदम
विचल

मुस्कान विचल, आज
यह, कुछ लगे हैं जो
आज बाकी में मेरे कानों
तो इसकी आवाज सुनने
के लिए मैंने नहीं मे
नगर रह है

समझ है इसकी, फिर
अपनी आज की पर लगे
बासा वह लगे लगे लगे लगे
कोई लगे लगे की लगे लगे लगे

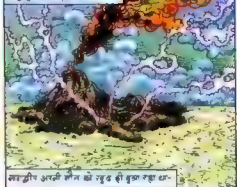
उपलब्ध वह इसकी
विन रह है, और
विन की अलोक लगे
ने इसकी वह लगे लगे
रह रह है

विचल को कुछ
करने की अवसर
नहीं थे, वह लगे लगे
को लगे लगे लगे लगे
और लगे लगे लगे लगे
लगे लगे लगे लगे लगे

इसकी ईश्वरियों में कल निकल कर
बोता का सीमा के दिमाग से सन्निक
नहीं के 'रेगुलो बेलम' की तरह
बाहर निकल रही थी।



और वे सन्निक नहीं उन्हें तरक
फेककर उस इंसान को फेंक रही
थी, जिससे किष्क के जलवायु
के अंदर बिरने देरक था।



साड़ीप अरनी सैन को खुद ही बुझ रहा था-

लेकिन हमें वकन सड़कद्वारा पर मेंदरने बाहर चलता
अकेला साध ही नहीं था-

एक सन्निक और असन्निक में उतर रहा था



मैंने, मैंने,
हम, बेलम
मैंने हक-

आ, तु वहां पर
असन्निक बल कर रहा है,
लेकिन, अपने बाकी अंदर
कहां है?

ह...
जेल में

जेल में? बहुत बुरा
वृत्ति! जेल में
कैसे? नहीं? कब?

तो बीस, अगर वहाँ पर थे नहीं
तो आपने अपने सम्बन्धियों
के लिए जिस खतरा टाक और
अ फायरमैन की चेतावनी को
सराया था उसकी मदद से हमने
कुछ पैसे कमाने की सोची।

हमने फायरमैन
बनकर फायरफोरेन्स ब्रिड में
बकौनी हाथी। एक भी गोली
नहीं चलायी गयी। हम
कामयाब भी हो गए थे।

पर जमान
में बीच में
आकर गल
हड़बड़
कर दी।

बैच हुआ उन
चेतावनी को और
टुक को

न... नहीं
जेल!

उस कबड़
के से से रूप
और नहीं मिलते

उसके कबड़ों और
हारी हुज्जतों विषय में
कुछ भी कहने की हिम्मत
कैसे की? जहाँ तक
बिनाद विषय में?

हमारे अहमी
और कबड़ हम
न जमान की
नज़रों में हो
गया। पर एक
हम बच



अगर जमान ने मेरे बकी
मापी पकड़ लिया तो न बच
कर कैसे आ पाऊँ?

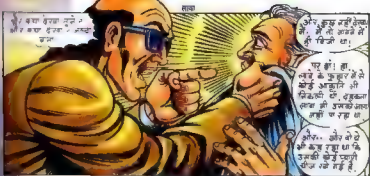
एक सम्बन्ध ने बच
लिया मैं। जमान ने तो
अपनी एक तमिज़ मेरे पीछे छोड़
दी थी, पर देन बचन पर मेरे और
उसके बीच में अमीन को पोकड़
लावें वह अपना दिक्कत आया।



तमिज़ उस लव
की फुहार के पर नहीं
कर पाई!



मौक
महाबल में
पाव?



क्या दे रहा है ?
और क्या दे रहा है ?
बस

और कुछ नहीं देता
मैं, मैं तो जानते हैं
ही बिजो था !

पर हाँ ! हाँ !
मारे के फुहार में से
कोई आकृति भी
निकली है, दुश्मना
साथ ही उसकी आवाज
नहीं कर रहा था

और... और बोले
भी कुछ नहीं था कि
उसकी कोई प्रगति
धीरे से नहीं है.



लोहे में निकली
आकृति गुंजाते जैसी
तो नहीं थी ?

ही, बीस मिनट
पताला-दुबारा इसका
अंतर हरिम में उसे
ही पड़ेगा : चित्त की
आवाज में उसे ज्ञान ही
नहीं पता था

आधी कहानी बच रहा है
और वह प्रगति ही उसकी
बेटी है ! मैं दे रहा था कि उसमें
बिगने बिगने ही आधी बेटी को
आवाज नहीं है फिर से बच
चिरा था

हमें बच
क्या था कहा
पर हाँ
मेरे ही

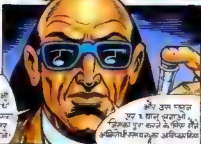
पहले वह कहानी में से
हवा में बैसे ही इसका वह
हवा में बैसे ही है, और मैं
हवा में बैसे ही उसमें वह उसी
ही बच ही साकन भी है.

कहात और
साकन में बच ही
हवा में बैसे ही
में बच नहीं पता
अब कहात पर
में बच ही है.



हैंक, जैक के साथ
साकन में उसमें बच रहा
था और मैंने कहात में
वह साकन में ही बच
होने नहीं नहीं थी ? वे
कोई आधी भी नहीं
पर हाँ

वे तो वह बच ही बच ही हैं !
कहात का बच ही बच ही हैं,
साकन की बच ही हैं, आधी बेटी
को बच ही बच ही बच ही हैं
आवाज, बच ही बच ही हैं,
मैं



और उस प्रगति
पर 1 घंटे बच ही
मैं बच ही बच ही बच ही हैं
अब बच ही बच ही बच ही हैं

जैसा कि आप में अड़न कर सकते हैं
की उपलब्ध कर सकते हैं।

पर इस बात में हेलो, रकुव ही मरक
कुत्तरों से डरक रहे थे -

और और का गहरा साहस।

अब मैं तुम, सारंग मेरे मेरे
 सही सुनने लगाऊँ। तुम्हीं
 लम्बे हैं न मर २, मैं तुम्हें
 सुनी अथवा, और तुम्हें कि
 उता सारी सुनते अप सारंग
 कंठकप तुम, उम सारंग
 सारंग तुम देवी सुनते का सुनी
 सारंग सारंग सारंग सारंग

आपके कुशलता पर हम
आपके आभार प्रदर्शित हैं।
मेरे सुकृत प्रदान करने के लिए।
रक्षा है। और आपकी
विजय है। वे मेरे अंग
आपके अंग

சுருதி, சுவரம், சாஸ்திரம்
கருதி நீ மனநிலை தீர்

मैं समझ रहा हूँ कि, समझ रहा हूँ
कि समझ में कुछ रहस्य को छिपा
करके मैं प्रणम कर सकता हूँ

आहूँ। लालसाज किले हाथों में
 अब गढ़ है। पर लोभ के चरणों
 तरफ में बैठ होले के काला हुनक
 दुर्धराणी काले लोभ में बहने वाली
 लिकना में बंकेने और लालसाज मित्र,
 लोभ पालने नक, दुर्धराणी काले में
 यह मकन है।

उसके बाद वह जैसे ही समस्त रूप में आसना, कुछ कमी लावे क, पेशेवर का स्वर्ण उसे भयानक कर

मनुष्य कृष्ण करनी हारा, नु कया
अरे कैं, सगल कयल नैं सैं कन
मकनी है

झींघे झिरते उस
रखेय पर जहाँ की लेटी धर रही-



कोई १००० १ बरतों के बीच से
एक बरत का गोल काल
एक बरत के गोल से
एक बरत के गोल से

आकाश की ओर से
एक बरत के गोल से



लेकिन जोहोरी की
लेकिन जोहोरी की
लेकिन जोहोरी की

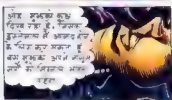
आका, आका मैं भी
मैं भी मैं भी मैं भी
मैं भी मैं भी मैं भी

जब तु मर-
आकाश की
आकाश की
आकाश की



आकाश की ओर से
आकाश की ओर से
आकाश की ओर से

आकाश की ओर से
आकाश की ओर से
आकाश की ओर से



आकाश की ओर से
आकाश की ओर से
आकाश की ओर से



आकाश की ओर से
आकाश की ओर से
आकाश की ओर से

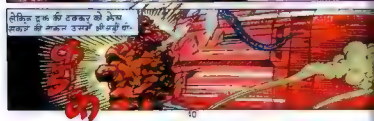
आकाश की ओर से
आकाश की ओर से
आकाश की ओर से

आकाश की ओर से
आकाश की ओर से
आकाश की ओर से

आकाश की ओर से
आकाश की ओर से
आकाश की ओर से



और ट्रक, रेलवे में कैद
बाहर का भी तरह काक
पड़ा -



होती है। जो भाग के इन्होंने हाथ
के ही भी पकड़ कर सकते थे



बना है मुझे उस
अधुन का बना बना के
वहाँ आता हूँ मजबूत
हूँ मजबूत तो है मुझे, मैं
उस मजबूत की तरह
अपना कर दूँ



अब मैं नु हुनरी
दुनियाँ में आ मैं अपने
प्यारी चीज को तुम्हारे हा
थों में दूँगा मजबूत तुम
पूरा

मैं नु हुनरी ही दूँ
आपकी मैं दूँगे अपनी नहीं हूँ, हज़ार
मुझे जान दूँगे तो अपनी प्यारी चीज
का बना कैसे पाओगे ?

अब मैं मजबूत हूँ
हूँ मैं नु मजबूत बड़ा
अपनी चीज दूँगी
दुनियाँ में अब मैं
मजबूत बड़ा हूँ
करीब

मैं नु हुनरी
आपकी मैं दूँगे अपनी नहीं हूँ, हज़ार
मुझे जान दूँगे तो अपनी प्यारी चीज
का बना कैसे पाओगे ?



मिथिल सो हुआं उसके, निकले से मिलाव
मुझे ही

... फिर, मजबूत
ही चीज बना है ?

न. नु बड़ा कैसे
मजबूत ?



मैं सिर्फ बड़ा ही नहीं
मजबूत बूझि, मजबूत की चीज
से करके का मरीका मैं
मजबूत बड़ा हूँ

अब मैं
मजबूत हूँ मैं
मजबूत हूँ मैं

ये देख। ये गरीब 'आचार देव' जैरे
मुझसे पर चढ़ा पर अलग है। वेले भी
मेरे लगे के कारण मुझसे मे चढ़ा पर अलग
ही छ। अब मुझकी धारे की मलिनता
मुझपर मुझकी भी गलतफहमी फैल कर देगी
और मुझसे लगे को भी

मुझकी छोटी भी मदद
मे ही करेगा। मुझसे
बिलर को देखोही में
मुझसे दंड
करके



मुझसे अपनी इस तरह से
मुझसे नहीं मदद गलत छ-

मुझसे की इस गलतफहमी से कि अब
बहुत अपनी लगे से ही प्यारी चीज को जलाने वाली दंड नहीं पाएगा



आजकल जाने कि, अब तक जीवित थीं और तो नहीं-

ये दुःख मज्जा कर
हो बिर्वाक ?
ये ५५ बकी तो बेहोशी
में कामगमा रही है।

कुमार बिर्वाक के
अंदर कुछ अप्रसुत
इकिते थीं हैं कुमारी
बिर्वाक। जैसे कुमारी
महामूर्ख किया है।
ये अबकय इसकी
होम में साने का
कुछ प्रयत्न
कर रहे हैं।



आजकल बिर्वाक की अंतर्ध्वंसक इच्छा-

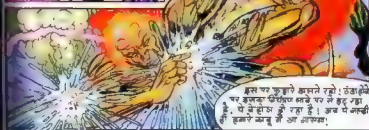
इसकी कुछ संकेत मिल रहे थे-

इसकी ओजिओं मकाम हो गई थी

उलझे उस बेहोश
मज्जा की वस पिता
का पता मिला बिर्वाक
ध-

जिसको धधकते नज्जासूखी का
पिछलता भाव भी स्वप्न नहीं कर
पाया था -

अरे! यह... यह
क्या ? मैंने आदुष्ट
इकिते मज्जाके बना
रही है कि मेरी
रुमई चीज कहां पर
है, यह नकर लेता
महामूर्ख है, भ्रष्टा
सेना के भी मकाम



इस पर कुहारे कासते रहो ! ठंडा होने
पर कुलका विरहण साधे पर ले हट रहा
है, ये बेहोश को रहा है। अब ये नज्जा
हमारे कानू में आ जायगा!

दिशाएँ ज़ादों में कुछ
रखा है और ये पानी
की लहरें धारें उस बेहोशों
की एकता को और मजबूत
कर रही हैं

साथ ही साथ मेरा
विचार भी मुझमें खिल
खिल रहा है

मुझे ऐसा अनुभव
रहा है कि मुझमें खिल
खिली चीज का पता
मिल गया है

मही, ये धूल नहीं है,
अब मुझको इस चीज की
स्थिति के अंकित भी मिल
रहे हैं वह चीज यहाँ से
उत्तर, पश्चिम दिशा में है
यहाँ से लड़ाक़ा भी सीधे
दूर

पर मेरी इच्छा मेरा भाव
पर नियंत्रण है और ये पानी
की धारें भाव पर मेरी
नियंत्रण को कमज़ोर कर रही
हैं साथ ही साथ ये पानी
भाव को इच्छा में नियंत्रण
ही रोक भी कर दे रहा
है

लेकिन जहाँ
दूर चाहूँ हो
गया है -

मुझको बहुत
पर आता है!

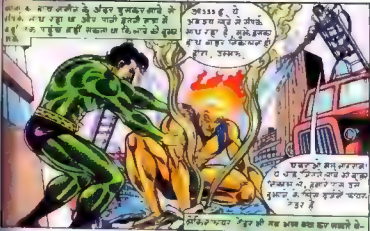
जहाँ
है

मुझ में
बैठा हुआ है
जहाँ

मैंने पर
राहु भी नि
आती है -

आप के साथ लड़ने के अंदर हुआ कर आपने मेरी
 जीवित नहीं रखा था और पाती इतनी कम है
 कि मैं एक पापुच नहीं सकता था कि आपके को बुरा
 लगे

असह्य है ये
 अब इस लड़ने में मैंने
 आप रखा है, मुझे इसका
 साथ नहीं निकालना ही
 होता, उसका

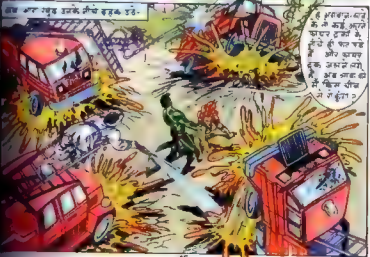


एक ओर मैं मर रहा हूँ।
 वहाँ जिनके लड़ने की बुराई
 निकलती है, दूसरे पक्ष उस
 मुझसे के बिना दुनियाँ कायर
 होता है

शक्ति का पहरा नेटुर ही सब अपने कण कर सकते थे-

आप और मुझे उनके बीच बुराई डरो-

है असाधारण कार्य
 के ले कई करते
 पावर टर्न के
 लड़ने ही कर रहे
 हैं और कायर
 दुक उनमें लगे
 हैं अब आज के
 मैं किस चीज
 में गड़बड़ा



आसस हा मेरा सिर खरी
मर चुक रहा है जलराज !
इसीलिए मुझे मेरी अन्न कंठपरी
पक रही है, वैसे भी अब मुझको
उन स्थान को पता जिन जगह है
मे तु मुझे, बलवान नहीं चाहता
था ! अब मैं पहले उस प्यारी
लकड़ को हलियुन करके, और
फिर उस बुद्धों को दंड दूंगा
जिनहोंने मेरी प्यारी चीजों को
मुझसे नुस्त किया ! और
फिर मुझको इस हाथत
में पहुँचा दिये

बस, इस इकत मुझको
उनकी हाकलें टाट नहीं
आ रही हैं.

ये तो सचमुच नागद्वीप
की दिशा में आ रहा है ! पर...पर
इसको नागद्वीप का पता जिन कैसे ?

पता नहीं सौहार्दो, लेकिन
अगर इसकी गह प्यारी चीज
सचमुच नागद्वीप में ही है तो वह
असली चने के चक्कर में नागद्वीप
को तबाह कर सकता है !

मुझे इसको
रोकने के लिए इसको
पीछे जला होगा !

संज्ञा प्र भाव को समझे में ही
 गीक मंने के सिखा हुआ मैं ठहरी



लेकिन



कहा हुआ मतलब
 तुम जल्द का पीछा
 करना चाहकर अपनी
 बिना में क्यों उड़े
 जा रहे हो ?



हुंदरने हाथ का गोल्ड
 रजकमयोज की हुंदरने के
 बाहर तैयार में जासूस
 जरी खतर के संकेत धन
 रहा है :

जाने क्यों मुझे
 किश मर रहा है कि
 लका के अने और
 किश मरकर चले
 यह हुआ होन में
 किश न कोई मीरप
 मकर है

वैसे ही लकड़ीप के
 वाली लक में अपनी
 चुन कर मकर में मकर
 है। लेकिन लकड़ीप
 वाली लक जैसे खतर
 में कर्म निपट नहीं
 जाये



कहासर के पिर भाव जैसे लक
 खतर में निपटन मुश्किल छ-

पर इंटरनेशनल गैरकानूनी एजेंसी के सामने उसके जैसे तीव्र स्वतंत्र सैनिक थे-

गैरकानूनी एजेंसी के सदस्य पर तैयार हथियारों के तो हमने चिन्तन कर दिया होगा। पर गैरकानूनी में मौजूद हथियार हम पर गोशिका बरस रहे हैं।

जिस तरह से ये गोशिका आग की दीवार को हमारी तरफ़ पार नहीं कर सकी वैसे ही हमारी गोशिकाएं हमारी डबल बुरेस्ट्रुप जैकटों को पार नहीं कर सकती।

तु तो बात कहना हमें को दबाना ज़ा! और आग की दीवारें पकड़ी करता ज़ा!

हमने तबत तक धर धर
संवाद पर काम शुरू कर दिया
है। हमारे लिए दोनों बड़े
संवाद कलावा और लालच
अभी भी लालच में ही
मौजूद हैं।

हमारी योजना के मुताबिक अभी
दोनों अपने में ही उलझे हुए
हैं। बिना एक के अरे उलझाई
रहना तो होती नहीं। और वही
बड़े को हम संभाल लेंगे।
फिर हमें एक विपदा पर संभाल
की जरूरत नहीं है।

बड़ा तक तुम
कभी पहुँच नहीं
पाओगे!



अभी तो उस झूठे तक
पहुँचने की सोचो जहाँ पर कई
दोस्त मौत खा चुके हैं।



छ... यहाँ पर
तो अस्सी मीट्रिक
मिटरघरिटी सिस्टम
लगा है, बाँस।

जमीन के
अंदर से अजब
आ रही है।

तुम जैसे बैलानों के लिए
मिटरघरिटी सिस्टम पूरी
दुनिया में लगा हुआ है।
और इस मिटरघरिटी सिस्टम
का नाम है...



बाँस राज!

सही
समय है।

हम तो
समय के लालच हैं।

पर तुम नहीं समझे।
यहाँ पर अस्सी मीट्रिक के लिए
हमने जगह- जगह पर जगह
जग फिट कर परते हैं।

जो मेरे रिमोट के सट्टे
इसारे पर फट सकते हैं!
और तुम्हारी लकड़बुतियाँ
भी तुमको आग से नहीं
बचा सकतीं!



आग को आग ही बरक सकती थी-

इस लीज आग उठानते शैतानों से आगराज की अकितियाँ नहीं खिप सकती थी-



आग ही इस शैतानों के चक्रीय को जल कर सकता था-

पर फिर आग तो उसका काट
नागद्वीप पर बरसने लगे था-

यहाँ पर है यह स्थान
संकेत तो यहाँ से आ रहा
थे। यहाँ पर तो कुछ भी
जजर नहीं आ रहा
है!



आग को अदृश्य
नागद्वीप जजर नहीं आ रहा था-

मेकिल नागद्वीप पर मौजूद
आग, आग को डेर कर सकते थे-

ये कौन शैतान
है जो हमारे अस-
पाव जल रहा
है!



ये कहीं नहीं
तो नहीं है जिसकी
मैंने संकेत भेजे थे।
पर इसकी आग
कैसी नहीं है!

यह जो शैतान
नहीं हो सकता
जो लकड़ी को
होड़ा में आ
सके!



यह तो आग
उसकी आग जलने
है। अब मैं इससे
संपर्क नहीं करूँ।
यह खुद ही निरा
होकर आपस पर
जल रहा है!

क्या नागद्वीप का अदृश्य कवच
को अपनी बेटी तक पहुँचाने से है
सपना? और क्या नागराज के
सपना अब तक की सबसे बड़ी
कठिनाई को? क्या वह ऐसा कर
के लिए निरा हो रहा पाया? क्या
होगा इस लकड़ी का जंतु? क्या
के लिए होना करे...

विनाशलीला

जो मेरे रिमोट के सट्टे
इसारे पर फट सकते हैं!
और तुम्हारी लकड़बुतियाँ
भी तुमको आग से नहीं
बचा सकतीं!



आग को आग ही बरक सकती थी-

इस लीज आग उठानते शैतानों से आगराज की अकितियाँ नहीं खिप सकती थी-



आग ही इस शैतानों के चक्रीय को जल कर सकता था-

पर फिर आग तो उसका काट
नागद्वीप पर बरसने लगे था-

यहाँ पर है यह स्थान
संकेत तो यहाँ से आ रहा
थे। यहाँ पर तो कुछ भी
जजर नहीं आ रहा
है!



आग को अदृश्य
नागद्वीप जजर नहीं आ रहा था-

मेकिल नागद्वीप पर मौजूद
आग, आग को डेर कर सकते थे-

ये कौन शैतान
है जो हमारे अस-
पाव जल रहा
है!



ये कहीं नहीं
तो नहीं है जिसकी
मैंने संकेत भेजे थे।
पर इसकी आग
कैसी नहीं है!

यह जो शैतान
नहीं हो सकता
जो लकड़ी को
होड़ा में आ
सके!



यह तो आग
उसकी आग जलने
है। अब मैं इससे
संपर्क नहीं करूँ।
यह खुद ही निरा
होकर आपस पर
जल रहा है!

क्या नागद्वीप का अदृश्य कवच
को अपनी बेटी तक पहुँचाने से है
सपना? और क्या नागराज के
सपना अब तक की सबसे बड़ी
कठिनाई को? क्या वह ऐसा कर
के लिए निरा हो रहा पाया? क्या
होगा इस लकड़ी का जंतु? क्या
के लिए होना करे...

विनाशलीला